Shodhaamrit, Vol.-2; Issue-2 (July-Dec.) 2025 : Page No.-72-75

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-2.0
Vol.-2; issue-2 (July-Dec.) 2025
Page No- 72-75

©2025 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

कमलप्रीत कौर
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला.

Corresponding Author :
कमलप्रीत कौर
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला.

हिंदी आत्मकथा साहित्य में महिलाओं का योगदान

शोध सार : आधुनिक युग में हिंदी साहित्य को सर्वश्रेष्ठ युग माना जाता है। जिसमें पद्य के साथ गद्य (कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, जीवनी, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्टताज और आत्मकथा) साहित्य का भी विकास हुआ। गद्य की अन्य विधायों की भांति ही आत्मकथा आधुनिक युग की एक लोकप्रिय विधा बन गई। आत्मकथा मानवीय जीवन के प्रत्येक पहलू को उद्घाटित करने में समर्थ है, इसलिए साहित्य की सभी विधाओं में आत्मकथा सहज विधा के रूप में प्रतीत होती है। हिंदी आत्मकथा का आरम्भ भले ही पुरुष आत्मकथाओं से हुआ हो किंतु कालांतर में महिलाओं द्वारा लिखित आत्मकथाओं ने हिंदी आत्मकथा लेखन को एक नई दिशा प्रदान की और इस विधा को आगे बढ़ाने का काम किया।

बीज शब्द : आधुनिक युग, गद्य, आत्मकथा, महिला आत्मकथा।

प्रस्तावना : हिंदी साहित्य के इतिहास में आधुनिक काल का अत्यधिक महत्व है, इस काल में ही गद्य साहित्य का विकास हिंदी में हुआ। हिंदी साहित्य में गद्य परम्परा का आरम्भ आधुनिक काल से हुआ, इसी कारण आधुनिक काल को रामचंद्र शुक्ल ने गद्य काल की संज्ञा दी। जहाँ रीतिकाल में साहित्य केवल पद्य में लिखा जा रहा था वहीं आधुनिक काल तक आते-आते गद्य साहित्य का आरम्भ हुआ, जिसका श्रेय भारतेन्दु को ही जाता है। गद्य साहित्य के अन्तर्गत बहुत सी विधाओं का आविर्भाव हुआ जैसे- कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, जीवनी, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्टताज और आत्मकथा। हिंदी गद्य साहित्य के विकास क्रम की एक लम्बी परम्परा है, जिसमें आत्मकथा हिंदी गद्य साहित्य की लोकप्रिय विधा है। आत्मकथा शब्द की उत्पति के संबंध में संस्कृत आचार्यो का मानना है कि इस शब्द की उत्पति, "आत्मन' और कथा से हुई है। विभक्ति तत्पुरुष के नियम के अनुसार इसमें से पूर्वपद की विभक्ति का लोप हुआ है। इस शब्द के विग्रह हैं- आत्मन कथा, आत्मना कथा और आत्मने कथा।"[1] वृहद् हिंदी कोश के अनुसार, "आत्मकथा आत्मन् और कथा का सामांसिक रूप है जिसका अर्थ है

अपना निज का आत्मा का, मन का और कथा का अर्थ है अपनी जीवन कहानी।"[2] प्रस्तुत परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि आत्मकथा का अर्थ स्वयं के जीवन की कथा से है। शब्दों के माध्यम से अपने संपूर्ण जीवन के प्रत्येक पक्ष को पूरी सच्चाई और ईमानदारी के साथ तटस्थ होकर अभिव्यक्त करना है, "आत्मकथा समय प्रवाह के नीचे तैरने वाले व्यक्ति की कहानी है। इसमें जहाँ व्यक्ति के जीवन का जौहर प्रकट होता है वहीं समय की प्रवृत्तियाँ और विकृत्तियां भी स्पष्ट होती हैं।"[3] इस प्रकार कहा जा सकता है कि आत्मकथा व्यक्ति विशेष के जीवन के जीवन के साथ-साथ उस से जुड़े समाज, समय, परिस्थितियों को भी उद्घाटित करती है। आत्मकथा किसी लेखक द्वारा अपने जीवन अनुभवों का वर्णन करने वाली कथा है यह संस्करण से मिलती-जुलती विधा है, लेकिन आत्मकथा व्यक्तिपरक होती है तथा इसके केंद्र में स्वय लेखक होता है।

हिंदी साहित्य में आत्मकथा लेखन परम्परा भारतेंदु की ही देन है। हिंदी आत्मकथा साहित्य का प्रारम्भ इसी काल से मानना उचित होगा। अगर हिंदी साहित्य की प्रथम आत्मकथा की बात की जाए तो बनारसीदास जैन कृत 'अर्द्धकथानक' जो कि सन् 1641 में लिखी गई थी इसे हिंदी की प्रथम आत्मकथा माना जाता है। यह एक पद्यात्मक आत्मकथा है जिसका प्रकाशन 1943 में हिंदी ग्रथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई ने किया। इसके पश्चात् हिंदी की प्रथम गद्य आत्मकथा भारतेंदु द्वारा रचित 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती' 1876 में लिखी गई, जिसका प्रकाशन कवि वचन सुधा में किया गया। इसके पश्चात् अम्बिकादत्त व्यास कृत 'आत्मकथा निजवृतान्त' 1901 में प्रकाशित हुई। फिर महावीर प्रसाद द्विवेदी कृत 'मेरी जीवन रेखा' 1933 ई. में प्रकाशित हुई, लेकिन इसी बीच 1931 ई. को मुशी प्रेमचंद ने हंस पत्रिका के विशेषांक 'आत्मकथा' के माध्यम से हिंदी आत्मकथा साहित्य को गति प्रदान करने का कार्य किया, इस विशेषांक में लगभग 33 रचनाएँ छपी जिन्हें प्रेमचंद ने आत्मकथा की संज्ञा से अभिहित किया। इसके बाद अनेकों आत्मकथाओं ने हिंदी आत्मकथा साहित्य को एक नई दिशा की ओर ले जाने में अपना योगदान दिया जिनमें से डॉ. श्यामसुंदर दास कृत 'मेरी आत्म कहानी' (1941 ई.), राहुल सांकृत्यायन की 'मेरी जीवन यात्रा' (1946 ई.), बाबु गुलाबराय कृत 'मेरी असफलताएँ' (1946 ई.), देवेन्द्र सत्यार्थी कृत 'चाँद सूरज के सीरन' (1952 ई.), डॉ. हरिवंशराय की आत्मकथा चार खंड़ो में प्रकाशित 'क्या भुलू क्या याद करुँ' (1969 ई.), 'नीड़ का निर्माण फिर' (1970 ई.), 'बसेरे से दूर' (1977 ई.), 'दस द्वार के सोपान तक' (1985 ई.) इत्यादि हिंदी की सर्वश्रेष्ठ पुरुष आत्मकथाएं रही हैं।

अगर महिला आत्मकथा लेखन की बात की जाए तो इसका आरम्भ बांग्ला भाषा से माना जाता है, हिंदी साहित्य जगत में ये बहुत बाद की बात है। हिंदी आत्मकथा साहित्य में महिला आत्मकथा की बात की जाए तो प्रथम महिला आत्मकथा दु:खिनी बाला द्वारा रचित 'सरला एक विधवा की आत्मजीवनी' है, "स्त्री दर्पण पत्रिका में जुलाई सन् 1915 से 1916 तक अंको में आत्मजीवनी का धारावाहिक रूप से प्रकाशन भी हुआ था।"[4] "यह आत्मकथा बाल विवाह और विधवा विवाह जैसी विकट समस्याओं का शिकार बनी एक स्त्री समाज द्वारा दिए गए तिरस्कार और अपमान से व्यथित हो उन परपराओं पर प्रश्नचिह्न लगाती है।"[5] इसके बाद हिंदी साहित्य में महिला आत्मकथा लेखन न के बराबर हुआ। "1927 में स्फुरना नामक महिला ने अबलाओं का इंसाफ शीर्षक से आत्मकथा लिखी, जो 'चाँद' कार्यालय इलाहाबाद में छपी थी।"[6] यह किसी महिला द्वारा लिखी गई प्रथम आत्मकथा मानी गई।

तत्पश्चात् हिंदी आत्मकथा जगत में लगभग चार दशक बाद, "जानकी देवी बजाज की आत्मकथा 'मेरी जीवन यात्रा' 1956 ई. में श्री रिषभदेव राका द्वारा (लिपिक) बोलकर लिखवाई गई थी।"[7] 20वीं शती के अंतिम चरण तक आते-आते हिंदी महिला आत्मकथा साहित्य की गति तेज़ हुई और एक के बाद एक महिला आत्मकथाएँ प्रकाशित होती रही। 1990 में प्रतिभा अग्रवाल द्वारा लिखित 'दस्तक जिन्दगी की' (प्रथम भाग) आत्मकथा प्रकाशित हुई, इसके बाद 'मोड़ जिन्दगी का' 1996 ई.(द्वितीय भाग) प्रकाशित हुई, इन आत्मकथाओं में प्रतिभा अग्रवाल ने अपने बचपन से लेकर शादी के बाद के जीवन के प्रत्येक पहलू को उजजागर किया है। इसके बाद महिला आत्मकथाओं का जो सिलसिला चला वो आज तक जारी है।

महिला आत्मकथा लेखन के विकास में कुसुम अंसल कृत 'जो कहा नहीं गया' (1996), "अरविंद जैन ने इसे हिंदी साहित्य में किसी भी लेखिका द्वारा लिखित पहली आत्मकथा कहा है।"[8] इसके बाद कृष्णा अग्निहोत्री की 'लगता नहीं है दिल मेरा' (1997), और और.....औरत (2010), शीला झुनझुनवाला कृत 'कुछ कही कुछ अनकही' (2000), मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा 'कस्तूरी कुण्डल बसै' (2002) इनकी आत्मकथा का प्रथम भाग है जिसमें लेखिका ने अपनी माँ कस्तूरी के माध्यम से स्त्री अस्मिता की बात की है। इसके बाद इनकी आत्मकथा का द्वितीय भाग 'गुड़िया भीतर गुड़िया' (2008) प्रकाशित हुई तत्पश्चात् महिला आत्मकथा लेखन की इस कतार में पद्मा सचदेवा द्वारा लिखित 'बूँद बाबड़ी' (2005), रमणिका गुप्ता 'हादसे' (2005), 'आपहुदरीः एक जिद्दी लड़की की कहानी' (2015), चंद्रकिरण सौनरेक्सा 'पिंजरे की मैना' (2008), मन्नू भंडारी 'एक कहानी यह भी' (2007), सुशीला कृत 'एक अनपढ़ कहानी' (2005), सुषम बेदी 'आरोह अवरोह' (2014), निर्मला जैन 'ज़माने में हम' (2015) इत्यादि अनेकों ऐसी महिला आत्मकथाएं हैं जिन्होंने हिंदी आत्मकथा साहित्य में भरपूर योगदान दिया है और आत्मकथा लेखन को एक नई दिशा प्रदान की।

हिंदी आत्मकथा साहित्य में महिला दलित आत्मकथाएं भी लिखी गई हैं, कौशल्या बैसंत्री कृत 'दोहरा अभिशाप' 1999 में प्रकाशित हुई जिसमें लेखिका ने एक तो महिला ऊपर से दलित होने के कारण भोगे गए संताप को अपनी आत्मकथा के केन्द्र में रखा है। आत्मकथा का लिखने का उद्देश्य बताते हुए लेखिता कहती हैं, "क्योंकि हिन्दी में दलित महिलाओं के आत्मकथा सहित्य का अभाव है जिसकी शुरुआत में मैं भी हिस्सा देना चाहती हूँ।"[9] इसी कतार में सुशीला टाकभौरे द्वारा लिखित आत्मकथा 'शिकंजे का दर्द' (2008) तथा कावेरी की 'टुकड़ा टुकड़ा जीवन' इत्यादि दलित आत्मकथाओं ने हिंदी आत्मकथा साहित्य में अपना योगदान दिया और अपने जीवन के सकारात्मक और नकारात्मत पक्षो को उधेड़ कर पाठकों के सम्मुख पेश किया।

हिंदी आत्मकथा लेखन में जहां एक तरफ हिंदी साहित्य से जुड़ी महिलाओं ने अपना योगदान दिया वहीं साहित्य से सीधे रुप में संबंध न होते हुए भी कई ऐसी महिलाएं हुई हैं जिन्होंने आत्मकथा लेखन में अपना योगदान दिया, जैसे मेरी कॉम कृत 'मेरी कहानी' (2014), लीला सेठ द्वारा लिखित 'घर और अदालत' (2010), सीमा कपूर कृत यूँ' गूज़री है अब तलक' (2024) ऐसी आत्मकथाएं हैं जिन्होंने महिला आत्मकथा के सफर को आगे बढ़ाने में अपनी सहभागिता दी। एक बार आत्मकथा की मंद गति पर प्रतिक्रिया करते हुए प्रो मैनेजर पाण्डेय ने कहा था कि, "स्त्रियों की आत्मकथाएं तो इसलिए नहीं हैं क्योंकि उन्हें सामाजिक ढाँचे में सच बोलने की

स्वतंत्रता नहीं है, लेकिन पुरुषों की आत्मकथाएं इसलिए नहीं हैं क्योंकि स्वतंत्रता तो है किंतु आदत नहीं है।"[10] किंतु आज महिला आत्मकथाओं की विकाम यात्रा को देखते हुए यह कथन असंगत प्रतीत होता है, क्योंकि 21वीं शती में महिला आत्मकथाओं में जो परिवर्तन आया उसके फलस्वरूप आज महिला आत्मकथाकारों ने बड़ी बेबाकी से अपने जीवन के सकारात्मक तथा नकारात्मक पक्ष को पाठकों के समक्ष उधेड़ कर रख दिया है।

निष्कर्ष : अतः कहा जा सकता है कि भारतेंदु युग से जो हिंदी आत्मकथा लेखन का सिलसिला प्रारम्भ हुआ था उसमें समय-समय पर महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दिखा कर हिंदी आत्मकथा के विकास में अविस्मरणीय योगदान दिया है। समकालीन अधिकांश आत्मकथाएं महिलाओं द्वारा ही लिखी जा रही हैं, इसके साथ ही महिला आत्मकथाकारों ने आत्मकथाओं के माध्यम से स्त्री जीवन से जुड़े अनेकों अनकहे प्रसंगों को पाठकों के समक्ष उद्घाटित किया है साथ ही कहा जा सकता है कि वर्तमान युग की महिला आत्मकथाएं स्त्री के सफल एवं सशक्त रूप में उभर कर नई स्थापना करने में सफल एवं सक्षम रही हैं।

संदर्भ सूची :

1. सिद्धान्तोलोचन, श्री धर्मचंद संत, पृ.-2.
2. बृहद् हिंदी कोश, कालिका प्रसाद, ज्ञानमंडल लिमिटेड वाराणसी, प्रथम संस्करण 2002, पृ.-310.
3. साहित्य के नये रूप, डॉ. श्याम सुंदर घोष, कृष्णा बदर्स, अजमेर,1969, पृ.-18.
4. हिंदी का आत्मकथा साहित्य, डॉ. विश्वबन्धु व्यथित, पृ.-35.
5. प्रतिरोध का दस्तावेजः महिला आत्मकथाएँ, नीरु, संजय प्रकाशन, 2009, पृ.-9.
6. पुस्तक वार्ता- जुलाई अगस्त, 2012, पृ.-39.
7. हिंदी का आत्मकथा साहित्य, विश्ववंधु, व्यथित, पृ.-37.
8. औरत: अस्तित्व और अस्मिता, अरविंद जैन, राजकमल प्रकाशन, 2021 पृ.-25.
9. दोहरा अभिशाप, कौसल्या बैसन्त्री, परमेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली,1999 पृ.-71.
10. आत्मकथा की संस्कृति, पंकज चतुर्वेदी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2011 पृ.-57.

•